Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वर्तमान समय में किशोरों की समस्याओं पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन: लखनऊ शहर के विशेष सन्दर्भ में

प्रभा श्रीवास्तव, शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
डॉ. जी पी मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

सारांश

समस्या हर जगह है। समस्या मानव समाज के साथ एक आवश्यक और अपरिहार्य घटक के रूप में जुड़ा हुआ है। हम में से अधिकांश अपने घर या कार्यस्थल पर अपने जीवन में किसी न किसी रूप में किसी न किसी समस्या की स्थिति से गुज़रे हैं। यह जीवन का एक हिस्सा है, वास्तव में यह हमारे समय में अधिक है। यह एक तरफ बढ़ते व्यक्तिगत मतभेदों और समाज के विविधीकरण और दूसरी ओर आर्थिक, राजनीतिक और अन्य क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या, और सीमित भौतिक स्थान और संसाधनों के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण है। ऐसी पृष्ठभूमि में किशोरों को व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों संघर्षों के बीच उन्हें रचनात्मक रूप से संभालना और हल करना सीखना होगा। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों के समक्ष उत्पन समस्याओं का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार अधिकतम किशोर अपने भविष्य को लेकर बहुत चिन्तित रहते हैं। नव किशोर और किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन होने से परेशानी की समस्या सबसे ज्यादा होती है। किशोरों को घर की समस्या और सामाजिक समस्या जैसी बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

परिचय

डिजिटल युग ने समकालीन भारतीय समाज को अपनी चपेट में ले लिया है। ग्लोबल विलेज और उसके रीति-रिवाजों के दरवाजे खोल दिए गए हैं। भारतीय संस्कृति में गहरे समाए रीति-रिवाजों का तेजी से क्षरण हो रहा है। एक तरफ, कुछ बदलाव पर शोक मनाते हैं, जबकि अन्य एक नए भविष्य की आशा करते हैं। परिवर्तन की सुनामी अपने साथ कई लाभ लेकर आई है जो हमारे लिए इतने सामान्य हो गए हैं कि हम उनकी सराहना करना भूल गए हैं। मोबाइल फोन और उससे जुड़ी संचार अवसंरचना एक उल्लेखनीय उदाहरण है। हालाँकि, परिवर्तन की हवाओं ने समाज में नकारात्मक प्रभाव भी लाए हैं। परिवारों की नींव अब उतनी स्थिर नहीं रही जितनी पहले थी। उदाहरण के लिए, ग्रामीण जीवन के बीच सहयोग लगभग गायब हो गया है।

भारतीय समाज में आए परिवर्तनों ने एक विशाल पीढ़ी का अंतर पैदा कर दिया है। जो माता-पिता धार्मिक और सामाजिक दोनों तरह के पारंपरिक रीति-रिवाजों पर पले-बढ़े हैं , वे अब एक ऐसी भावी पीढ़ी के संपर्क में हैं जो अलग तरह से सोचती और काम करती है। ये अंतर अक्सर माता-पिता और उनके नए विकसित बच्चों के बीच संघर्ष का कारण बनते हैं , और ये संघर्ष किशोर के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनती है जो उसके माता-पिता के साथ रहने में आती है। (कोलिन्स एंड लॉरेन, 1998; सेरा, 1971)।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किशोरावस्था जीवन की एक ऐसी अवस्था है जब लोग न तो बच्चे होते हैं और न ही वयस्क। किशोरावस्था विकास तथा समायोजन का वह समय है जो बचपन से शुरू होता है और प्रौढ़ावस्था में लीन हो जाता है इस काल में बचपन समाप्त हो जाता है और परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होती है वास्तव में यह समय परिवर्तन का समय ही है। किशोरावस्था की शाब्दिक परिभाषा, शब्द Adolescere से निकला है जिसका अर्थ है फलना फूलना अथवा प्रौढ़ होना। जीव विज्ञान के दृष्टिकोण से किशोरावस्था व समय हैं जब यौवन आरंभ होता है वह जीवन का वह भाग है जो 12 वर्ष से 17 -19 वें वर्ष तक होता है जिसमें निजी तथा सांस्कृतिक अंतर होते हैं। कोहलन के अनुसार किशोरावस्था वह काल है जिसकी विशेषताएं हैं लिंगी सामाजिक , व्यवसायिक, आदर्श संबंधित समायोजन और माता-पिता पर निर्भरता से मुक्ति प्राप्त करने का चेष्टा। स्टैनले हाल के अनुसार किशोरावस्था बहुत दबाव तथा तनाव और तूफान तथा संघर्ष का समय होता है।

किशोरों का व्यवहार और सोच माता-पिता के मूल्यों और उनके आसपास के मूल्यों के बीच एक पुल का प्रतिनिधित्व करता है (अग्रवाल और अन्य , 2017) वास्तव में, पूर्व को अक्सर समकालीन जीवन के आकर्षण और उनके प्यार और अपने माता-पिता और रिश्तेदारों के प्रति वफादारी के बीच विभाजित किया जाता है।

किशोरों और उनके माता-पिता के बीच झड़पें होती हैं। किशोरावस्था जीवन की एक ऐसी अवस्था है जिसमें माता-पिता के साथ चुनौतियाँ सबसे अधिक होती है। अक्सर यह मौन आक्रोश का रूप ले लेता है और अन्य समयों में यह अधिक मुखर या हिंसक व्यवहार के लिए चरम पर हो सकता है। (नेविस, 2012; लॉरेन एंड कॉलिन्स, 2004)

इस प्रक्रिया में दोनों पक्ष बंधे हुए हैं, किशोर अपनी आर्थिक निर्भरता से और माता-पिता जो अपने सपनों को गायब होते हुए पाते हैं। वे भी महसूस करते हैं कि किशोरावस्था विकास की सबसे कठिन अवस्था है (अरनेट , 1999)।

किशोरावस्था की समस्याएं बहुत ही जटिल समस्याएं हैं किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन की अत्यंत विकासशील अवस्था होती है इस अवस्था में व्यक्ति का शारीरिक मानसिक और सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे अपने परिवार तथा समाज के साथ नया समायोजन स्थापित करना पड़ता है किशोरावस्था की समस्याएं शारीरिक वृद्धि का समायोजन , मानसिक स्पर्धा का समायोजन , भावात्मक बेचैनी के प्रति समायोजन, परिवारिक समायोजन, मित्रों के प्रति समायोजन , लैंगिक समायोजन, औषध व्यसन और समाज के साथ समायोजन करने की समस्या है।

किशोरावस्था शारीरिक तथा संवेगात्मक गड़बड़ी के कारण जीवन की अत्यंत कोमल अवस्था होती है इसमें किशोरावस्था के बालक बालिकाओं को कुछ बुनियादी आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न होने वाले विभिन्न कठिनाइयों तथा समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनके कुछ आवश्यकता है इस प्रकार है- निर्भरता से स्वतंत्रता की आवश्यकता , विरोधी लिंग में आकर्षण , आत्मनिर्भरता की आवश्यकता , जीवन दर्शन की आवश्यकता, सुरक्षा की आवश्यकता , मान्यताएं एवं आत्म पहचान की आवश्यकता , अच्छे खाने की आवश्यकता, नए अनुभवों की आवश्यकता, स्वग्राही होने की आवश्यकता तथा उपलब्धि एवं सफलता पाने की आवश्यकता। अतः इस अध्ययन में शोधकर्ता ने वर्तमान समय में किशोरों के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं उसके समाधान का अध्ययन लखनऊ शहर के विशेष सन्दर्भ में करने का निश्चय किया है

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

किशोरावस्था

किशोरावस्था शब्द लैटिन शब्द 'एडोलेसेरे' से आया है, जिसका अर्थ है "विकसित होना" या "परिपक्वता की ओर बढ़ना"। "जैसा कि आज इसका उपयोग किया जाता है, 'किशोरावस्था' शब्द का व्यापक अर्थ है और इसमें मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक के साथ-साथ शारीरिक परिपक्वता भी शामिल है"। किशोरावस्था की एक कार्यात्मक परिभाषा में कहा गया है कि यह "वर्षों की वह अवधि है जिसके दौरान लड़के और लड़कियां बचपन से वयस्कता, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से आगे बढ़ते हैं"। किशोरावस्था बचपन से वयस्कता में बढ़ने की प्रक्रिया है। मनोवैज्ञानिकों ने इस अवधि के लिए 13 से 18 वर्ष की आयु सीमा दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने यह सीमा 10 से 19 साल तक दी है। लेकिन आयु वर्ग एक भौगोलिक स्थिति से दूसरी और एक ही भूगोल में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है। यह वह अवधि है जो किशोर की शुरुआत के साथ शुरू होती है। यौवन वह अवस्था है जब यौन भावना उत्पन्न होती है , जननांग परिपक्व होते हैं और लड़कियों में मासिक धर्म शुरू होता है और लड़कों में वीर्य शुरू होता है, बगल और जननांगों पर बाल उगते हैं , लड़कियों में स्तन बढ़ने लगते हैं , लड़कों में आवाज बदल जाती है , आदि। यह वह अवधि है जब किशोरों द्वारा बहुत अधिक मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का अनुभव किया जाता है।

किशोरावस्था को अक्सर मानव जीवन चक्र में एक रोमांचक क्षणभंगुर चरण के रूप में वर्णित किया जाता है, लेकिन शायद यह सबसे चुनौतीपूर्ण चरण भी है। यह एक ऐसा समय है जब किशोर नई खोजी गई स्वतंत्रता और नई जिम्मेदारियों के साथ वयस्कों में विकसित होते हैं। वे लगातार अपनी नई पहचान की तलाश में रहते हैं। वे वयस्क दुनिया के मूल्यों पर सवाल उठाते हैं और उनकी सराहना करते हैं और अपनी पहचान पर जोर देने की कोशिश करते हैं। किशोरावस्था के दौरान वे कौशल विकसित करते हैं जो उन्हें देखभाल करने वाले और जिम्मेदार वयस्कों के रूप में विकसित होने में मदद करेंगे। जब किशोरों को देखभाल करने वाले वयस्कों द्वारा समर्थित और प्रोत्साहित किया जाता है , तो वे अकल्पनीय तरीके से फलते-फूलते हैं , साधन संपन्न बनते हैं और अपने परिवार और समाज के सदस्यों के रूप में योगदान करते हैं। उत्साह से ओतप्रोत , ऊर्जा से लबरेज , और जिज्ञासा से भरे हुए, किशोर सकारात्मक प्रासंगिक वातावरण को देखते हुए उत्तरदायी और जिम्मेदार होते हैं। उनके पास व्यवहार के नकारात्मक सामाजिक भागीदारों को बदलने और रूढ़िबद्ध स्वभाव के चक्र को तोड़ने की अपार क्षमता है। अपनी रचनात्मकता और ऊर्जा के साथ, किशोर वर्तमान दुनिया को आश्चर्यजनक तरीकों से बदल सकते हैं, न केवल खुद के लिए बल्कि सभी के लिए एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

कोलमैन (1992) के अनुसार किशोरावस्था की आयु की निचली सीमा (आमतौर पर यौवन की शुरुआत के साथ संगत) पर आम सहमति होती है , इसकी ऊपरी सीमा पर कोई सहमति नहीं होती है। किशोरावस्था को परिभाषित करने में यह अस्पष्टता या भ्रम बहुत उपयुक्त है क्योंकि यह किशोरावस्था की घटना की एक प्रमुख विशेषता को प्रतिबिंबित करती है। इस भ्रम से हमें इस संभावना के प्रति सचेत होना चाहिए कि युवाओं की अवधारणा की तरह किशोरावस्था की अवधारणा भी काफी हद तक एक सामाजिक निर्माण है। वास्तव में , किशोरावस्था शब्द की सटीक परिभाषा देना मुश्किल है , यहां तक कि जब सरल कालानुक्रमिक मानदंडों के बजाय विकास के चरणों का उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए , किशोरावस्था की तुलना वयस्कता और बचपन से करते हुए, रिचर्ड जेसर किशोरावस्था की निम्नलिखित परिभाषा प्रस्तुत करते हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यदि बचपन बुनियादी मानव कार्यों जैसे मोटर कौशल और भाषा में महारत हासिल करने का समय है और वयस्कता व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान को मजबूत करने का समय है तो किशोरावस्था अन्वेषण और अवसर का समय है जब अधिकांश किशोर शारीरिक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक परिपक्वता की नींव रखते हैं।(जेसर, 1991ए)

संक्रमण केवल बचपन से वयस्कता तक हो सकता है , संक्रमण मार्कर यौवन की शुरुआत है। जहां किशोरावस्था को जीवन की एक अवस्था के रूप में पहचाना जाता है, वहीं यह एक ऐसी अवधि प्रतीत हो सकती है जो जीवन जीने के प्रतिमानों को स्थापित और समेकित करती है। वयस्क जीवन के कई व्यवहार पैटर्न , विश्वास, मूल्य और दृष्टिकोण सीखे और प्रबलित किए जाते हैं। किशोरावस्था में जो होता है उसका व्यक्ति और समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव हो सकता है।

तालिका 1 किशोरों के मनोवैज्ञानिक विकास के चरण

चरण	**प्रारंभिक किशोरावस्था (उम्र 12-14)**	**मध्य किशोरावस्था (उम्र 15-17)**	**देर से किशोरावस्था (उम्र 18 और ऊपर)**
स्वतंत्रत	1.माता-पिता की गतिविधियों में कम रुचि	1.माता-पिता के संघर्ष की चोटियाँ	1.माता-पिता की सलाह और मूल्यों की पुनः स्वीकृति
शरीर की छवि	1.स्व और यौवन परिवर्तन के साथ पूर्व-व्यवसाय 2.उपस्थिति के बारे में अनिश्चितता	1.शरीर की सामान्य स्वीकृति 2. शरीर को और अधिक आकर्षक बनाने की चिंता	यौवन परिवर्तन की स्वीकृति
सहकर्मी संबंध	1.समान लिंग मित्रों के साथ गहन संबंध	1.साथियों की भागीदारी का शिखर 2.सहकर्मी मूल्यों के अनुरूप यौन गतिविधि में वृद्धि	1.सहकर्मी समूह कम महत्वपूर्ण 2.अंतरंग संबंधों में अधिक समय व्यतीत होना
पहचान	1.वृद्धि हुई अनुभूति 2.काल्पनिक दुनिया में वृद्धि 3.आदर्शवादी व्यावसायिक लक्ष्य	1.भावनाओं का दायरा बढ़ा 2.बौद्धिक शक्तियों में वृद्धि 3.सर्वशक्तिमत्ता की भावना 4.जोखिम लेने का व्यवहार	1.व्यावहारिक, यथार्थवादी व्यावसायिक लक्ष्य 2. मूल्यों का शोधन 3.समझौता करने और

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

	4.गोपनीयता की बढ़ती आवश्यकता 5.आवेग नियंत्रण की कमी		सीमा निर्धारित करने की क्षमता

साहित्य की समीक्षा

बेकर-वीडमैन ईजी और अन्य (2010) सुझाव देते हैं कि सामाजिक समस्या-समाधान में कमी बच्चों और किशोरों में अवसाद और आत्महत्या के बढ़ते जोखिम से जुड़ी हो सकती है। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि सामाजिक समस्या-समाधान के कौन से विशिष्ट आयाम युवाओं में अवसाद और आत्महत्या से संबंधित हैं। इसके अलावा, तर्कसंगत समस्या-समाधान रणनीतियाँ और समस्या-समाधान प्रेरणा उपचार प्राप्त करने वाले बच्चों और किशोरों में अवसाद और आत्महत्या में बदलाव को कम या भविष्यवाणी कर सकती हैं। तीव्र उपचार के परिणामों पर सामाजिक समस्या-समाधान के प्रभाव का पता 439 नैदानिक रूप से अवसादग्रस्त किशोरों के एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण में लगाया गया था, जो अवसाद अध्ययन वाले किशोरों के उपचार में नामांकित थे। आत्महत्या के संदर्भ में, परिहार समस्या-समाधान शैली और आवेग/लापरवाही शैली भविष्यवक्ता थे, जबकि नकारात्मक समस्या उन्मुखीकरण और सकारात्मक समस्या उन्मुखीकरण उपचार के परिणाम के मध्यस्थ थे। भविष्य के अनुसंधान के लिए इन निष्कर्षों, सीमाओं और दिशाओं के निहितार्थों पर चर्चा की गई है।

क्लाहर और अन्य (2011) ने किशोरों के बीच माता-पिता किशोर चुनौती और असामाजिक व्यवहार के बीच संबंध का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया। परिणामों ने संकेत दिया कि माता-पिता और उनके बच्चों के बीच चुनौती किशोर व्यवहार का एक मजबूत संकेतक है। यह जैविक और दत्तक बच्चों दोनों के मामले में नोट किया गया था।

वेटरलॉस (2012) ने यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी में एक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य डिजिटल पीढ़ी का अंतर और माता-पिता किशोर के बीच संबंध का पता लगाना था। परिणामों ने आगे दिखाया कि ट्विटर, वीडियो चैट आदि के संबंध में कथित पीढ़ीगत प्रौद्योगिकी अंतर के कारण माता-पिता के बच्चे का संघर्ष हुआ।

गार्सिया-रुइज़ और अन्य (2013) ने स्पेन में यह अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि किशोरों के अपने माता-पिता के साथ संबंध का उनके माता-पिता के साथ किशोर संघर्ष के प्रभावी समाधान से कोई संबंध है या नहीं। इसका उद्देश्य यह भी पता लगाना था कि उम्र और लिंग के संबंध में संबंध बदलते हैं या नहीं। नमूने में 295 किशोर शामिल थे जिनमें से 49.3% लड़कियां थीं। उपयोग किए गए उपकरण पारिवारिक संघर्षों को सुलझाने के लिए रणनीतियों और लक्ष्यों पर स्थितिजन्य प्रश्नावली और माता-पिता-बच्चे के संबंधों की गुणवत्ता पर अटैचमेंट स्टाइल प्रश्नावली हैं। परिणामों से पता चला कि माता-पिता के साथ संबंध बेहतर संचार और बातचीत से सकारात्मक रूप से संबंधित थे। माता-पिता के साथ संघर्ष चिंताजनक लगाव से संबंधित था, जबकि सुरक्षित लगाव निकासी तकनीकों के उपयोग से संबंधित था। चिंतित लगाव माता-पिता के साथ विवाद से संबंधित था जो संघर्ष समाधान रणनीतियों के उपयोग की भविष्यवाणी करता था।

श्रीमती एस राजेश्वरी (2014) ने स्कूल में किशोर छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं का विश्लेषण किया। उन्होंने डॉ हरकांत डी बदामी (1977) द्वारा विकसित छात्र समस्या सूची को निष्पादित करके XI कक्षा में

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पढ़ने वाले 101 छात्रों से डेटा एकत्र करने के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाकर और व्यवस्थित यादृच्छिक नमूना पद्धति का उपयोग करके उनके सकारात्मक विकास के लिए उपयुक्त जीवन कौशल का सुझाव दिया। किशोरावस्था बाल्यावस्था से वयस्कता तक का रूपांतरण काल है जहां किशोरों को बहुत सारे शारीरिक परिवर्तनों, मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों और सामाजिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है जो उनके सकारात्मक विकास के लिए एक बड़ा खतरा पैदा करते हैं। वे अकादमिक दबाव से भरे होते हैं और उन्हें अपने दोस्तों को खोजने, कक्षा में साथियों के साथ तालमेल बिठाने और शिक्षकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने में भी समस्या होती है। घर पर भी उन्हें अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ तालमेल बिठाने में बहुत मुश्किल होती है। निष्कर्षों से पता चला कि किशोर छात्र की उम्र और समस्या के स्तर के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

जोहल और कौर (2015) ने किशोरों में आक्रामकता और माता-पिता के व्यवहार के बीच संबंध का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। सैंपल में गुरदासपुर के विभिन्न सीनियर सेकेंडरी स्कूलों के 155 किशोर छात्र शामिल थे। परिणामों से पता चला कि किशोरों की आक्रामकता और माता-पिता के विचलित व्यवहार के बीच सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है। इसने आगे बताया कि माता-पिता द्वारा लड़कों की तुलना में लड़कियों के प्रति अधिक विचलित पालन-पोषण दिखाया गया है।

कोटर (2016) ने माता-पिता किशोर संघर्ष शैलियों और संघर्ष के परिणाम में उम्र और लिंग अंतर का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया। नमूने में 514 किशोर शामिल थे, जिनमें से 54% महिलाएं थीं। इस्तेमाल किया गया टूल "व्हेन वी डिअसग्री" स्केल (2009) का स्लोवेनियाई संस्करण था। परिणामों से पता चला कि माताओं को पिता की तुलना में अधिक आक्रामक या अधिक समझौता करने वाली संघर्ष शैली माना जाता था। आयु के अनुसार अंतर भी पाया गया। देर से किशोरावस्था में प्रतिभागियों ने बताया कि अपने से छोटे किशोरों की तुलना में उनके पिता और माता के साथ संघर्ष में उनमें अधिक निराशा और आक्रामकता थी, मध्यम आयु वर्ग के किशोरों ने बताया कि उन्हें जूनियर की तुलना में अपने पिता और मां के साथ अधिक निराशा और आक्रामकता थी।

मजूर और अन्य (2016) ने पोलैंड में यह अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक शिक्षार्थियों में विद्यालय उपलब्धि और समस्या व्यवहार के बीच संबंध की जाँच करना है। अध्ययन के लिए प्रतिदर्श में 70 विद्यालयों से यादृच्छिक रूप से चुने गए 4085 विद्यार्थी शामिल थे। अध्ययन के लिए उपयोग किए गए उपकरणों में बाल स्वास्थ्य और बीमारी प्रोफ़ाइल-किशोर संस्करण के पोलिश संस्करण से लिए गए 2 मानकीकृत पैमाने शामिल थे। परिणामों से पता चला कि स्कूली उपलब्धि और किशोरों के समस्या व्यवहार (शराब का उपयोग और अपराध दोनों) के बीच एक निश्चित संबंध मौजूद है। परिणाम आगे संकेत देते हैं कि बेहतर स्कूली शिक्षा किशोरों के बीच समस्या व्यवहार पैदा करने वाले कारकों के नकारात्मक प्रभाव को कम कर सकती है। एक अध्ययन के परिणामों से पता चला कि किशोरों और उनके माता-पिता के बीच होने वाले चुनौतियों का सीधा प्रभाव आत्मसम्मान के माध्यम से अवसाद के लक्षणों पर पड़ा।

सईदा सुल्ताना (2017) ने यह पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया कि क्या सोशल नेटवर्किंग साइटों के अधिक उपयोग से पारिवारिक संबंधों में गिरावट आई है। सैंपल में ढाका के 384 युवक शामिल थे। परिणामों से पता चला कि सोशल नेटवर्किंग साइटों के अत्यधिक उपयोग के कारण पारिवारिक संबंध टूट गए।

अग्रवाल और अन्य (2017) ने यह अध्ययन उत्तर प्रदेश में किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों और उनके माता-पिता के बीच पीढ़ी के अंतराल का अध्ययन करना था। नमूने में ऐसे किशोर शामिल थे जो यौवन तक पहुँच चुके हैं और बड़े किशोर भी, उनके माता-पिता के साथ जो 40 वर्ष से ऊपर हैं। इस उपकरण में अन्वेषक द्वारा पीढ़ी अंतराल से संबंधित मुद्दों और हमारे जीवन पर इसके दिन-प्रतिदिन के प्रभाव के बारे में एक प्रश्नावली शामिल थी। परिणाम से पता चला कि विभिन्न पीढ़ियों के 85.18% माता-पिता पीढ़ी के अंतराल के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

वलीज़ादेह और अन्य (2018) ने ईरान में पालन-पोषण पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अपने किशोर बच्चों के प्रति माता-पिता की चिंता का पता लगाना था। नमूने में किशोरों के साथ 23 माता-पिता शामिल थे। उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग किया गया था। अर्ध संरचित साक्षात्कारों के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। परिणामों से पता चला कि जैसे-जैसे बच्चे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, माता-पिता को लगता है कि वे पैतृक हाथों से बाहर जा रहे हैं।

के. नागेंद्र, आर. कोप्पाड, (2018) ने ग्रामीण और शहरी किशोरों के बीच स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार की व्यापकता का निर्धारण किया और किशोरों के बीच स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार की सह-घटना का आकलन किया। शहरी 2.92% (n=7) किशोर तम्बाकू का धूम्रपान करते हैं जबकि ग्रामीण 2.50% (n=6) तम्बाकू का सेवन करते हैं। शहरी में पहले धुएं की औसत आयु 14.28 (एसडी±1.57) थी और ग्रामीण में 13.33 (एसडी±2.05) थी। शहरी इलाकों में शराब पीने की व्यापकता 2.08% (n=5) और ग्रामीण इलाकों में 1.25 (n=3) थी। शहरी में पहले पेय की औसत आयु 12.5 (SD±3.57) थी और ग्रामीण में 10.66 (SD±4.02) थी। विभिन्न चैनलों के माध्यम से इस आयु वर्ग में अपनी वास्तविक क्षमता को उजागर करने के लिए स्वास्थ्य प्रथाओं को विकसित करने की बढ़ती आवश्यकता रही है। निष्कर्ष नीति निर्माताओं को समाज के इस कमजोर वर्ग की जरूरतों को पूरा करने के लिए उचित उपाय करने में मदद करेंगे।

निकेन रेफन्थिरा और उमिलातुल हसनाह (2019) ने विशेष रूप से माता-पिता और शिक्षकों को किशोरों के बीच समस्याओं की बेहतर समझ रखने का सुझाव दिया हैं। विकास का चरण वह चरण है जहां एक बच्चा बचपन से अधिक परिपक्व अवस्था में बढ़ना शुरू करता है। मनोविज्ञान के आंकड़ों ने किशोर विकास के महत्व के बारे में विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या की है। परिपक्वता तक पहुंचने के लिए किशोर कुछ चरणों से गुजरेंगे। किशोरावस्था के विकास की विशेषता शारीरिक परिवर्तन, सोचने के तरीके, भाषा और सामाजिक-भावनात्मक हैं। जीव विज्ञान, पर्यावरण और अनुभव के माध्यम से विकासात्मक चरण के सिद्धांतों का उत्पादन किया जाता है। विकास के चरण के दौरान माता-पिता, स्कूल के माहौल और साथियों का समर्थन महत्वपूर्ण है। यह लेख निवारक और हस्तक्षेप करने वाली कार्रवाइयों के साथ पिछले छह वर्षों के दौरान किशोरों में होने वाली कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर चर्चा करता है। उपेक्षा, खुद को नुकसान पहुँचाना, धूम्रपान व्यवहार, आत्मघाती व्यवहार, मादक द्रव्यों का सेवन, खाने का व्यवहार, यौन व्यवहार, डराना-धमकाना और इंटरनेट और खेलों का उपयोग मनोवैज्ञानिक समस्याओं के भाग हैं। किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को उचित रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है ताकि वे विकास के चरणों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें।

यू. हरिकृष्णन और ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2020) ने स्कूल जाने वाले किशोरों के सामने आने वाली चुनौतियों पर माता-पिता और शिक्षकों की धारणा की जांच की। डिजाइन प्रकृति में पार अनुभागीय है और नमूने में

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्कूल जाने वाले किशोरों के 60 माता-पिता और केरल के कोल्लम जिले के एक सरकारी और एक निजी स्कूल से आठवीं से बारहवीं कक्षा के 20 शिक्षक शामिल हैं। डेटा को नि: शुल्क लिस्टिंग का उपयोग करके एकत्र किया गया था और एंथ्रोपैक सॉफ्टवेयर के माध्यम से विश्लेषण किया गया था। ज्यादातर माता-पिता का मानना था कि स्कूल जाने वाले किशोरों को काफी तनाव का सामना करना पड़ता है और वे घर पर पढ़ाई नहीं कर रहे हैं। दूसरी ओर, शिक्षकों ने महसूस किया कि उनके किशोर छात्रों को परीक्षा का डर, मीडिया के नकारात्मक प्रभाव, घर पर आर्थिक बोझ, माता-पिता की अपने बच्चों की शिक्षा में कम भागीदारी और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। निष्कर्ष स्कूल जाने वाले किशोरों के समग्र विकास के लिए माता-पिता और शिक्षकों के सक्रिय सहयोग और भागीदारी को एकीकृत करने की आवश्यकता को सामने लाते हैं।

जून वांग और अन्य (2021) ने पाया कि प्रवासी और शहरी बच्चों की साक्षरता और गणित के प्रदर्शन के विकासात्मक प्रक्षेपवक्रों की खोज करने के साथ-साथ पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति (एसईएस) और पेरेंटिंग शैलियों के प्रभाव, जिसमें प्रवासी बच्चों की तुलना उनके शहरी समकक्ष साथ तुलना करके पेरेंटिंग शैलियों के मध्यस्थता प्रभाव शामिल हैं। चीन में प्रवासी बच्चों का सकारात्मक विकास गुणवत्तापूर्ण शहरी शिक्षा संसाधनों तक उनकी असमान पहुंच के कारण बाधित है। यह अध्ययन प्रवासी और शहरी बच्चों की साक्षरता और गणित के अलग-अलग प्रक्षेपवक्रों पर ध्यान केंद्रित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है ताकि उनकी स्कूली उपलब्धि में सुधार हो सके।

खरे, शिखा (2022) का उद्देश्य किशोरों की समस्या को समझना है और हम उनकी समस्या को कैसे दूर कर सकते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किशोरावस्था एक व्यक्ति के जीवन से जुड़ी एक संवेदनशील महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, प्रत्येक समझ और उसके मुद्दों को खोजने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण लिया जाना चाहिए। इन दिनों किशोरों के सामने आने वाली संभावित समस्याएं अलग-अलग होती हैं लेकिन इन मुद्दों पर केवल तभी रोक लगाई जा सकती है जब माता-पिता और वैकल्पिक अभिभावक उनकी समस्याओं के लक्षणों को समझेंगे। समस्या(यों) पर चर्चा करने के लिए माता-पिता को अपने बच्चों से, सावधानी से और बहुत ही दोस्ताना तरीके से संपर्क करना पड़ा। यह किशोरों के लिए भेद्यता की मात्रा है, जिसे समर्थन और समझ की आवश्यकता है। आज जिन मुद्दों का सामना किशोरों को करना पड़ रहा है, वे बहुमुखी हैं, लेकिन कई मामलों में उलझे हुए हैं। माता-पिता, शिक्षाविदों और वैकल्पिक अभिभावकों को उन मुद्दों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए जो आज के किशोरों का सामना करते हैं और अपने सर्वोत्तम कौशल से मुद्दों को खत्म करने के लिए तैयार रहते हैं।

शोध क्रियाविधि

इस अध्ययन में शोधकर्ता अपने उद्देश्य के अनुरूप ही वर्णनात्मक अभिकल्पों का सहारा लिया है। उत्तरदाताओं का चयन लखनऊ शहर के चयनित 5 वार्डो से किया गया है। प्रत्येक चयनित वार्ड से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार लखनऊ शहर के कुल 5 वार्डो से कुल मिलाकर 500 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। प्रत्येक वार्ड में सर्वप्रथम उन परिवारों के किशोरों और किशोरियों का अध्ययन किया गया है जिनके घरों के किशोरों और किशोरियाँ नेतृत्व में सहभागी हैं। इस अध्ययन में शोधकर्ता प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग करके सूचना एकत्रित किया है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विश्लेषण और व्याख्या

सारणी संख्या 2 किशोरों को किन समस्याओं का सामना ज्यादा करना पड़ता है।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	घर की समस्या का	40	8	0.7	1.4
2	सामाजिक समस्या का	40	8	1.0	2.0
3	स्कूल की समस्या का	10	2	0.0	0.0
4	उपरोक्त सभी का	410	82	1.3	0.8
5	**कुल**	**500**	**100.0**		

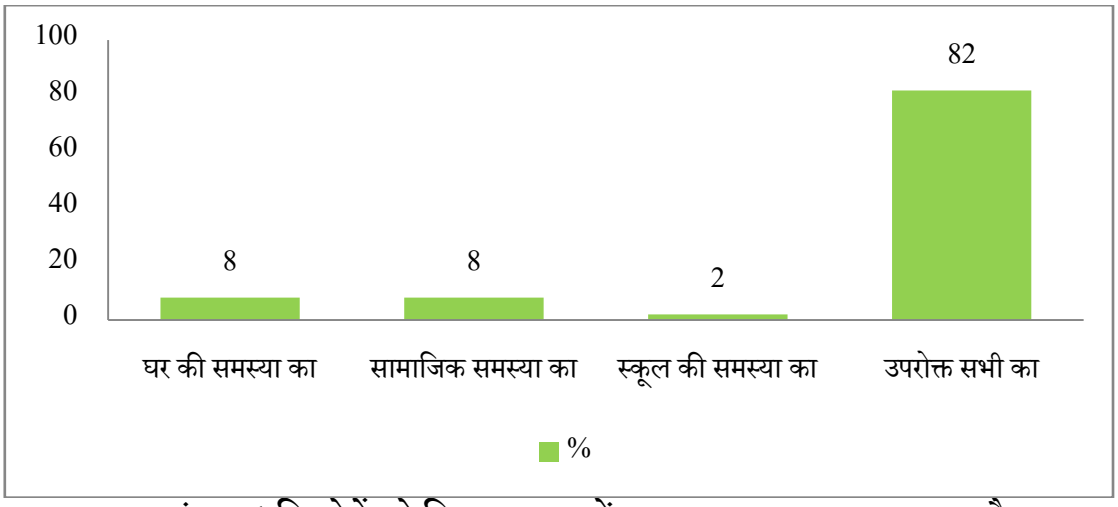

ग्राफ संख्या 1 किशोरों को किन समस्याओं का सामना ज्यादा करना पड़ता है।

उपरोक्त सारणी 2 से स्पष्ट है कि किशोरों को किन समस्याओं का सामना ज्यादा करना पड़ता है ? प्रश्न के उत्तर में 8 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 1 और 2 को चुना। मात्र 2 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 3 को चुना जबकि विकल्प 4 को सबसे ज्यादा लोगों में चुना। विकल्प 4 का मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 0.8 है। इससे सिद्ध हुआ कि कुल 82 प्रतिशत ने विकल्प 4 को विश्वसनीयता की दृष्टि से मानक विचलन 0.8 सार्थक है।

सारणी संख्या 3 किशोरों में तनाव के क्या कारण हो सकते हैं?

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	परेशानियों से जूझना	165	33	1.0	1.0
2	घर के असहयोग से	15	3	0.3	1.1
3	मित्रों से झगड़ा	30	6	0.7	1.6
4	उपरोक्त सभी	290	58	1.3	1.0
5	**कुल**	**500**	**100.0**		

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

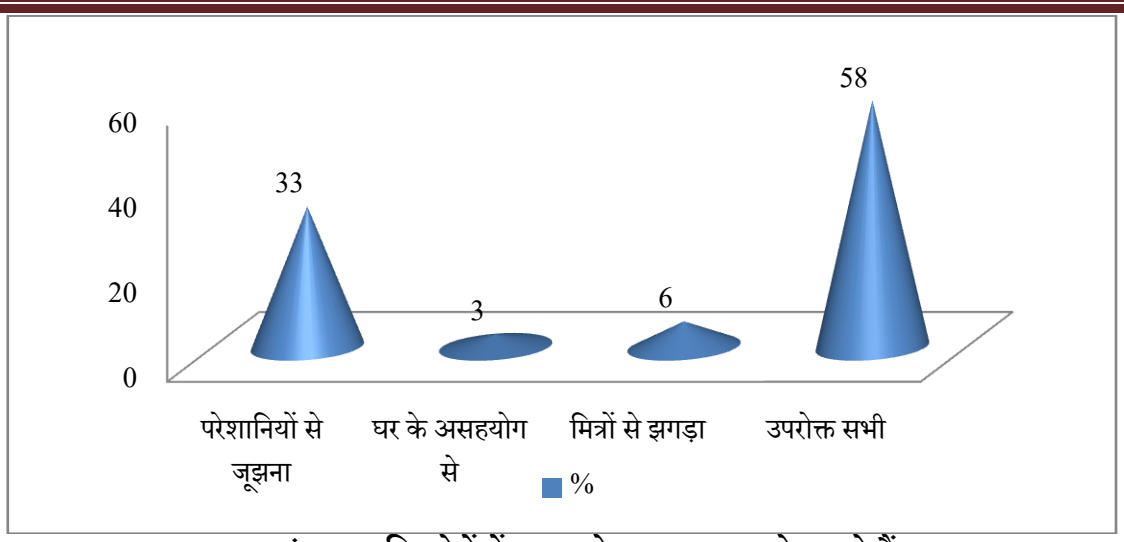

ग्राफ संख्या 2 किशोरों में तनाव के क्या कारण हो सकते हैं?

उपरोक्त सारणी 3 से स्पष्ट होता है कि किशोरों में तनाव के क्या कारण हो सकते हैं ? प्रश्न पूछने पर 33 प्रतिशत ने विकल्प 1, 3 प्रतिशत ने विकल्प 2, 6 प्रतिशत ने विकल्प 3 तथा 58 प्रतिशत ने विकल्प 4 का चुनाव किया। इस विकल्प का मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 1.0 है। इससे सिद्ध होता है कि प्रश्नावली में दिए गए उत्तर सार्थक हैं।

सारणी संख्या 4 किशोरों के तनाव को दूर करने के उपाय

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	समय से पढ़ाई करके	105	21	1.0	1.3
2	समस्या पर विचार विमर्श करके	50	10	0.3	0.6
3	घर पर टीवी देखकर	55	11	0.7	1.2
4	खेल ने से	290	58	1.3	1.0
5	**कुल**	**500**	**100.0**		

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

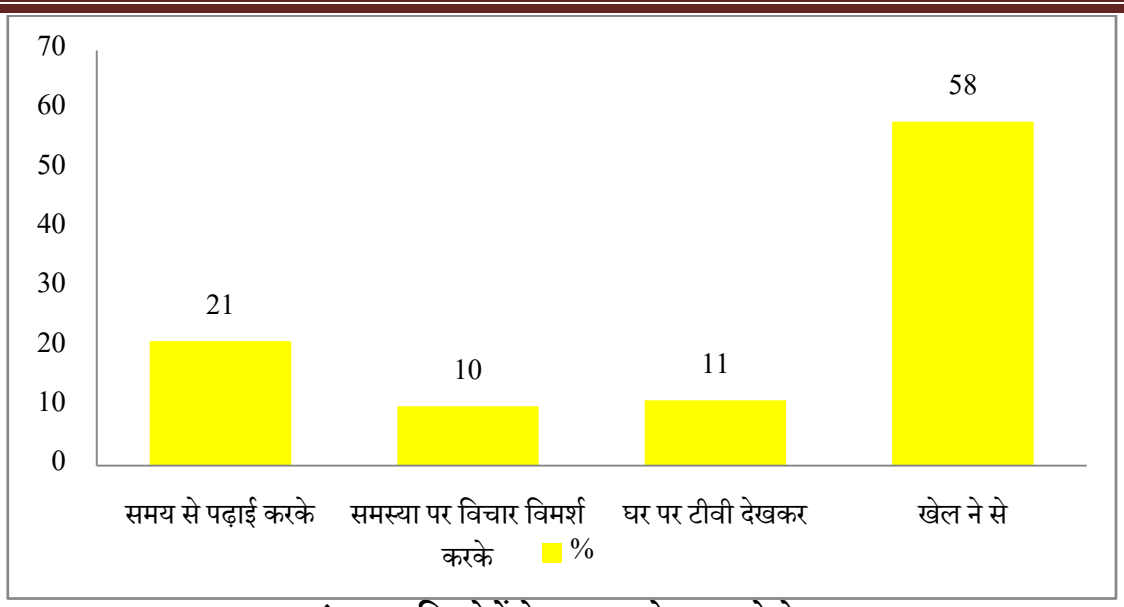

ग्राफ संख्या 3 किशोरों के तनाव को दूर करने के उपाय

सारणी 4 और ग्राफ 3 से स्पष्ट है कि किशोरों के तनाव को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें खेलने का पूरा मौका दिया जाए क्योंकि 58 प्रतिशत ने इसी विकल्प का चुनाव किया है। सबसे कम घर पर टीवी देखना पसन्द करते हैं। सबसे कम किशोर किसी समस्या पर विचार विमर्श करना चाहते हैं। किशोरों के द्वारा सबसे अधिक खेल का विकल्प 4 को चुना जिसका मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 1.0 है।

सारणी संख्या 5 एक किशोर अपने कैरियर को लेकर कैसा अनुभव करता है।

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	चिन्तित रहते हैं	195	39	1.3	1.1
2	डरे डरे रहते हैं	170	34	1	0.9
3	प्रसन्न रहते हैं	70	14	0.7	1.0
4	व्याकुल रहते हैं	65	13	0.3	0.5
5	**कुल**	**500**	**100.0**		

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

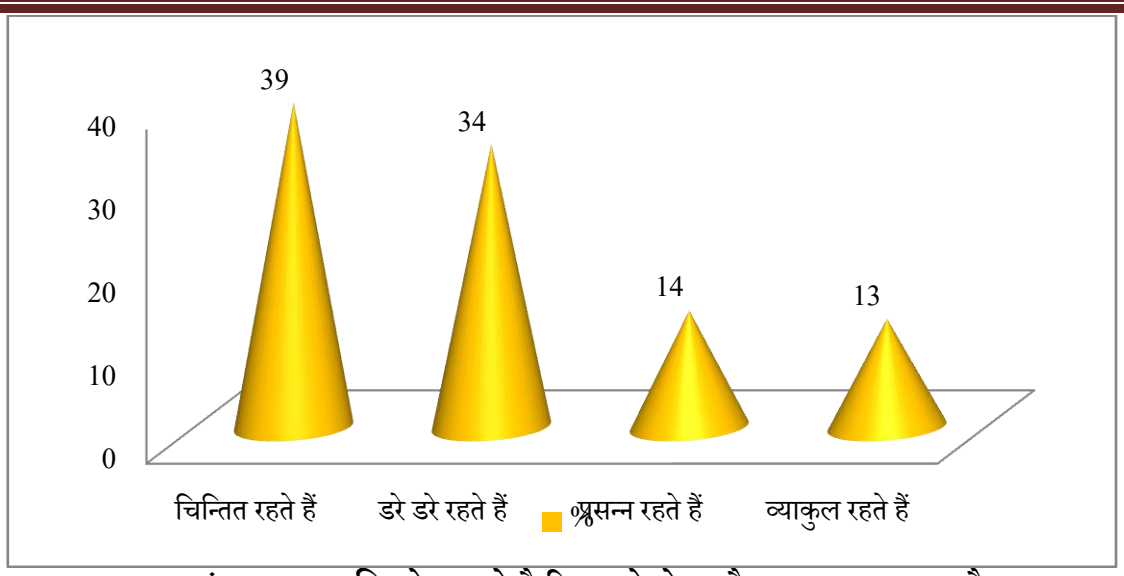

ग्राफ संख्या 4 एक किशोर अपने कैरियर को लेकर कैसा अनुभव करता है।

उपरोक्त सारणी 5 और ग्राफ 4 से स्पष्ट है कि एक किशोर अपने भविष्य को लेकर चिन्तित रहते हैं क्योंकि 39 प्रतिशत लोगों विकल्प 1 को चुना जिसका मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 1.1 है। 34 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 2 का चुनाव किया। सबसे कम 13 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 4 का चुनाव किया। जिसका तात्पर्य है कि किशोर भवष्यि को लेकर व्याकुल रहते हैं।

सारणी संख्या 6 नव किशोर - किशोरियाँ किन-किन समस्याओं का सामना करती हैं

विकल्प	मत	संख्या	%	मध्यमान	मानक विचलन
1	भय की समस्या रहती है	85	17	1.0	1.4
2	मानसिक उलझन	15	3	0.3	1.1
3	खालीपन की समस्या	55	11	0.7	1.2
4	शारीरिक पवित्रन से परेशान	345	69	1.3	0.9
5	**कुल**	**500**	**100.0**		

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

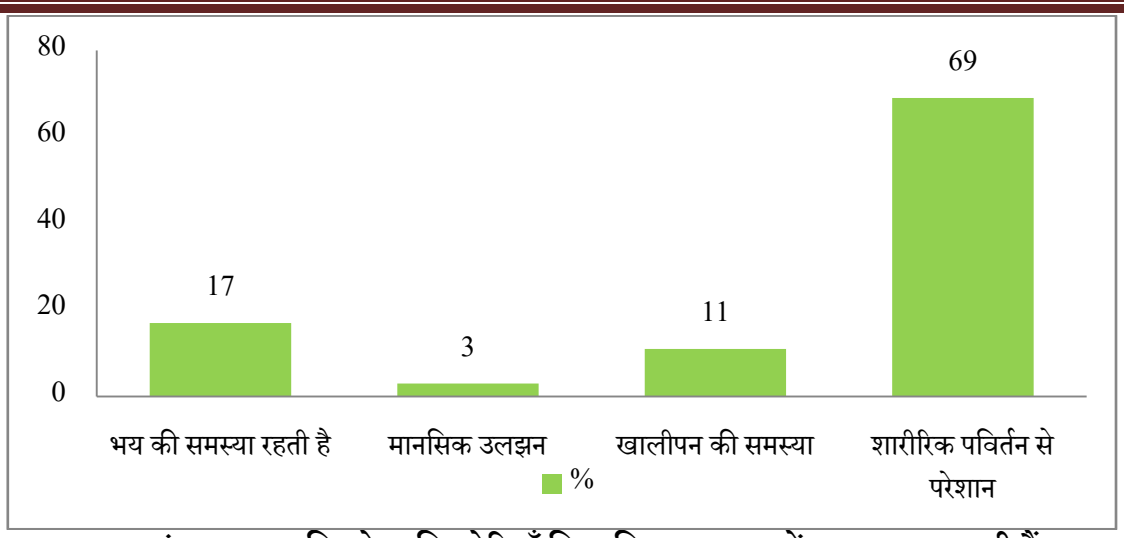

ग्राफ संख्या 5 नव किशोर - किशोरियाँ किन-किन समस्याओं का सामना करती हैं

सारणी 6 एवं ग्राफ 5 से स्पष्ट है कि नव किशोर और किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन होने से परेशानी की समस्या सबसे ज्यादा होती है क्योकि 69 प्रतिशत लोगों ने विकल्प 4 को चुना हैं। इस विकल्प का मध्यमान 1.3 और मानक विचलन 0.9 है। इससे सिद्ध होता है कि सर्वाधिक 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह विकल्प चुन कर विश्वसनीयता को बढ़ाया कि प्रश्नावली में दिए गए उत्तर सार्थक है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से पता चलता है कि किशोरों को घर की समस्या और सामाजिक समस्या जैसी बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोरों में समस्याओं से जूझने , घर वालों के असहयोग और मित्रों से झगड़े के वजह से अत्यधिक तनाव का सामना करना पड़ता है। किशोरों के तनाव को दूर करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें खेलने का पूरा मौका दिया जाए। एक किशोर अपने भविष्य को लेकर बहुत चिन्तित रहते हैं क्योंकि इस अध्ययन के निष्कर्ष के अनुसार अधिकतम उत्तरदाताओं का यही मानना है। नव किशोर और किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन होने से परेशानी की समस्या सबसे ज्यादा होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लॉरेन बी, कॉय के सी, कोलिन्स डब्ल्यूए)1998) रेकन्सिडरिंग चेंज इन पैरेंट चाइल्ड कनफ्लिक्ट-, 69 (3), 817-832.
2. अग्रवाल, अन्य (2017)। जनरेशन गैप एन इमर्जिंग इश्यू ऑफ सोसाइटी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी साइंस एंड रिसर्च। 4 (9), 973-83।
1. नेविस, शेली बी (2012) कॉसेस एंड इफ़ेक्ट ऑफ़ एडोलेसेंट एंगर। (मास्टर की थीसिस)। विनोना स्टेट यूनिवर्सिटी, मिनेसोटा, यूएसए।
3. कोलिन्स, विलार्ड, लॉरेन, ब्रेट (2004) चेंजिंग रिलेशनशिप , चेंजिंग युथ। जर्नल ऑफ़ एअरली एडोलसेंट, 24(1)। 55-62.
4. अर्नेट, (1999) एडोलसेंट स्टॉर्म एंड स्ट्रेस, रेकन्सिडर्ड द अमेरिकन साइकोलोजिस्ट 54 (5), 317-26।

5. कोलमैन, (1992) जे.सी. एंड वॉरेन-एडम्सन इन कोलमैन, जे.सी.। सी. (एड.) युथ पॉलिसी इन द 1990 द वे फॉरवर्ड, रूटलेज, लंदन।
6. जेसर, आर. (1991ए) यूथ एंड ड्रग्स। एन एजुकेसन पैकेज फॉर प्रोफेशनल्स (यूनिट I), एडिक्शन रिसर्च फाउंडेशन, टोरंटो, कनाडा।
7. बेकर-वीडमैन ईजी, एट अल। (2010) "सोशल प्रॉबलम्स सॉल्विंग एमोंग एडोलैसैंट्स ट्रीटेड फॉर डिप्रेशन", बिहैवियर रेस थेर। 2010 जनवरी; 48(1):11-8.
8. क्लाहर अन्य (2011) द रिलेशनशिप बिटवीन पैरेंट-चाइल्ड कॉन्फ्लिक्ट एंड एडोलसेंट एन्टीसोशल बिहेवियर: कन्फर्मिंग शेयर्ड एनवायरनमेंटल मेडियशन। जर्नल ऑफ़ एब्नार्मल चाइल्ड साइकोलॉजी , 39(5), 683-694.
9. वेटरलॉस, जे. मिच (2012) लेट एडोलैसैंट्स पर्सेप्शन्स ऑफ़ ए डिजिटल जनरेशन गैप एंड परसीव्ड पैरेंट-चाइल्ड रिलेशन। (पीएचडी थीसिस) यूटा स्टेट यूनिवर्सिटी, लोगान, यूटी।
10. गार्सिया-रुइज़ एट अल (2013) रेसोलुशन ऑफ़ पेरेंट्स-चाइल्ड कॉनफ्लिक्ट्स इन द अडोलेसेन्स। यूरोपियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी ऑफ एजुकेशन, 28(2), 173-188।
11. श्रीमती एस. राजेश्वरी (2014) "ए स्टडी ऑन द प्रॉब्लम्स ऑफ एडोलसेंट स्टूडेंट्स इन स्कूल", वॉल्यूम: 3, इशू: 7, जुलाई 2014, आईएसएसएन.सं. 2277 - 8179।
12. जोहल एंड कौर (2015) एडोलैसैंट अग्रेशन एंड पैरेंटल बिहेवियर: ए कोरिलेशनल स्टडी। जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 20(7), 22-27.
13. कोटर (2016) पैरेंट-एडोलसेंट कॉन्फ्लिक्ट स्टाइल एंड कॉन्फ्लिक्ट आउटकम: आगे जेंडर डिफरेंसेस। सिहोलोगिज, 49.245-262।
14. "जोश ग्रुप, 2009"। वी आर जोश। ब्लॉगर। 17 नवंबर 2009।
15. मजूर एट अल (2016) एक्सटर्नल इवैल्यूएशन ऑफ़ द स्कूल एंड एकेडमिक अचीवमेंट्स इन रिलेशन टू एलकोहल डिंकिंग एंड डेलीकेंट्स बिहैवियर एमोंग सेकंड्री स्कूल स्टूडेंट्स। एलकोहल एंड ड्रक्स अडिकशन। 29(4), 183-208।
16. सईदा सुल्ताना (2017) सोशल नेटवर्किंग साइट्स (एसएनएस) एंड फैमिली रिलेशनशिप: ए स्टडी ऑन यूथ्स ऑफ़ ढाका सिटी। आईओएसआर जर्नल ऑफ़ हयूमैनिटिज़ साइंस। 22(4), 46-52.
17. अग्रवाल, एट अल। (2017) जनरेशन गैप: एन इमर्जिंग इश्यू ऑफ सोसाइटी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी साइंस एंड रिसर्च 4 (9), 973-83।
18. वलीज़ादेह एट अल (2018) कंसर्नस ऑफ़ पैरेंट्स विथ ओर रेजिंग एडोलसेंट चिल्ड्रन: ए क्वालिटेटिव स्टडी ऑफ़ ईरानीयन फैमिलीज़ जे केयरिंग साइंस.1;7(1):27-33।
19. के. नागेंद्र, आर. कोप्पड, (2018) "प्रिवलेंस ऑफ़ हेल्थ रिस्क बेहवियर्स अमंग एडोलैसैंट्स ऑफ़ शिवमोग्गा: ए क्रॉस-सेक्शनल स्टडी", नेशनल जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी मेडिसिन वॉल्यूम। 8, अंक। 12, पीपी. 33-36.

20. निकेन रेफन्थिरा एंड उमिलातुल हसनाह (2019) "एडोलसेंट प्रॉब्लम इन साइकोलॉजी : ए रिव्यु ऑफ़ एडोलसेंट मेन्टल हेल्थ स्टडीज", एडवांसेज इन सोशल साइंस, एजुकेशन एंड हयूमैनिटिज़ रिसर्च, वॉल्यूम 3955वां आसियान कांफ्रेंस (एसीपीसीएच 2019)
21. यू. हरिकृष्णन एंड ग्रेस लालहलुपुई साइलो (2019) "ए लिटरेचर रिव्यु ऑन हेल्थ अमंग स्कूल गोइंग एडोलैसैंट्स इन इंडिया", रेस। जे. फॅमिली, कम्युनिटी एंड कंस्यूमर साइंस।, वॉल्यूम 7, इशू (2), पेज 13-15, जुलाई, 27 (2019)
22. जून वांग एट अल (2021) "द इम्पैक्ट ऑफ़ फैमिली सोसिओ इकनोमिक स्टेटस एंड पैरेंटिंग स्टाइल्स ऑन चिल्ड्रेन्स ऐकडेमिक ट्रेजेक्टरीज़:ए लोंगिटूडिनल स्टडी कंपेयरिंग माइग्रेंट एंड अर्बन चिल्ड्रेन इन चाइना फरवरी 2021, न्यू डिरेक्शंस फॉर चाइल्ड एंड एडोलसेंट", डेवलपमेंट 2021(176):81-102, डीओआई :10.1002/cad.20394
23. खरे, शिखा. (2022) एडोलैसैंट्स प्रोब्लेम्स एंड सोलूशन्स (1), ए मल्टीडिस्कप्लिनरी इंटरनेशनल पियर रिव्युड/रेफ्रीड जर्नल, वॉल्यूम। X, नंबर 1, आईएसएसएन 2319-7129, 2022